चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	19.3.26	6	8

THE TIMES OF INDIA

IND

IA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER | To subscribe call

HAU develops first hybrid mustard variety

Kumar Mukesh | TNN

Hisar: In a significant breakthrough for oilseed production, Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) has developed its first hybrid mustard variety, RHH-2101, aimed at enhancing productivity in irrigated regions. The newly developed variety is expected to benefit farmers across Haryana, Punjab, Delhi, Jammu and northern Rajasthan, while also contributing to reducing the country's dependence on edible oil imports.

HAU vice-chancellor Prof Baldev Raj Kamboj congratulated the team of scientists behind the development, stating that the hybrid has recently been officially notified. "This variety will prove to be a game-changer for mustard growers in irrigated areas," he said. Developed under the All India Coordinated Research Project on Mustard and Rapeseed, the hybrid underwent three years of rigorous testing before release. It offers an average yield of 28–30 quintals per hectare, outperforming existing varieties.

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	19.3.26	2	1-5

दैनिक जागरण

सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच-2101, 14.5% अधिक पैदावार बढ़ाएगी

जागरण संवाददाता • हिसार: चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच-2101 विकसित कर किसानों के भविष्य को नई दिशा दी है। कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज के अनुसार हाल ही में गजट अधिसूचित इस किस्म ने विज्ञानियों की मेहनत और नवाचार का उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत किया है। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में यह किस्म किसानों के लिए वरदान सिद्ध होगी। तीन वर्षों के परीक्षण के उपरांत विकसित यह हाइब्रिड किस्म औसतन 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक उपज देने में सक्षम है। यह पुरानी किस्म आरएच-749 से 14.5 प्रतिशत, डीएमएच-1 से 11 प्रतिशत और निजी हाइब्रिड 45546 से आठ प्रतिशत अधिक पैदावार देने में सक्षम है। इस उपलब्धि से न केवल किसानों की आय बढ़ेगी, बल्कि कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा भी मजबूत होगी।

प्रेस को संबोधित करते कुलपति प्रो. बलदेव राज कंबोज

तेल में समृद्ध और गुणों में उत्कृष्ट

अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग ने बताया कि यह किस्म लगभग 142 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है। इसकी शाखाएं अधिक होती हैं और फलियों में दानों की संख्या भी अधिक रहती है, जिससे इसकी उत्पादकता बढ़ जाती है। मध्यम आकार के दानों में लगभग 40 प्रतिशत तेल अंश पाया जाता है।

अनुसंधान में हकृवि आगे

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि विश्वविद्यालय का तिलहन अनुभाग देश के अग्रणी अनुसंधान केंद्रों में शामिल है। अब तक यहां सरसों और राई की 25 उन्नत किस्में और एक हाइब्रिड विकसित की जा चुकी है। पिछले 12 वर्षों में सरसों विज्ञानियों की टीम को चार बार सर्वश्रेष्ठ केंद्र अवार्ड से सम्मानित किया जाना उनकी निरंतर उत्कृष्टता का प्रमाण है।

हकृवि में किसानों के लिए मेला 23 से : प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि हकृवि में 23 मार्च से दो दिवसीय मेले का आयोजन होगा। इस मेले में बेहतर आर्गेनिक खेती करने वाले किसानों को भी सम्मान दिया जाएगा। इसमें वे किसान शामिल होंगे जिसके फसलों के नमूने लेकर अच्छे कार्य किए। यानी प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया जाएगा। इस बार की मेले की थीम है सतत् कृषि समृद्धि की राह।

इस हाइब्रिड किस्म के विकास में डा. राम अवतार, डा. नीरज कुमार, डा. मंजीत सिंह, डा. अशोक कुमार और डा. सुभाष चंद्र का महत्वपूर्ण योगदान रहा। साथ ही डा. राकेश पूनिया, डा. दिलीप कुमार, डा. निशा कुमारी, डा. विनोद गोयल, डा. श्वेता, डा. महावीर बिश्नोई और डा. राजवीर सिंह का भी सहयोग रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	19.3.26	5	1-5

हकृवि ने विकसित की सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आर.एच.एच. 2101

हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बढ़ाएगी पैदावार

पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज।

हिसार, 18 मार्च (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच 2101 विकसित कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। यह हाइब्रिड किस्म सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और देश में तेल के आयात को कम करने में अहम भूमिका निभाएगी।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने पत्रकारों के साथ बातचीत करते हुए बताया कि यह हाइब्रिड किस्म हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में सरसों की पैदावार को बढ़ाने में एक वरदान सिद्ध होगी। इस किस्म को अखिल भारतीय समन्वित सरसों एवं राई अनुसंधान प्रोजेक्ट के तहत तीन साल गहन परीक्षण के बाद जारी किया गया है।

यह किस्म 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत पैदावार देती है। पुरानी किस्म आरएच 749 की तुलना में 14.5 प्रतिशत, डीएमएच-1 से 11 प्रतिशत व प्राइवेट कंपनी हाइब्रिड45546 की तुलना में आठ प्रतिशत अधिक पैदावार देने में सक्षम है। यह किस्म 142 दिन में पककर तैयार हो जाती है और 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत उपज देती है। इनमें लगभग 40 प्रतिशत तेल अंश पाया जाता है।

हाइब्रिड किस्म के प्रजनक डॉ. राम अवतार ने बताया कि इस सरसों टीम ने गत 6 सालों में इस किस्म के अलावा अलग-अलग परिस्थितियों के लिए पांच किस्में विकसित की है जिनमें से आरएच 725 आरएच 1424 व आरएच 1975 किसानों के बीच बहुत ही लोकप्रिय किस्में है। कुलपति ने बताया कि इस बार कृषि मेला 23 व 24 मार्च को लगाया जाएगा। मेले में मुख्यातिथि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी होंगे। इस दौरान प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया जाएगा। साथ ही किसानों को नई तकनीक आधारित कृषि जानकारियां दी जाएंगी।

हाइब्रिड किस्म को विकसित करने में इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

इस नई किस्म को विकसित करने में सरसों वैज्ञानिक डा. राम अवतार, डा. नीरज कुमार, डा. मंजीत सिंह, डा. अशोक कुमार और डा. सुभाष चंद्र का अहम योगदान रहा। इस अनुसंधान कार्य में डा.राकेश पूनिया, डा. दिलीप कुमार, डा. निशा कुमारी, डा. विनोद गोयल, डा. श्वेता, डा. महावीर बिश्नोई और डा.राजवीर सिंह का भी सहयोग रहा। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डा. राजबीर गर्ग, डा.संदीप आर्य सहित अन्य वैज्ञानिक मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	19.3.26	5	1-3

हकृवि ने आरएचएच-2101 विकसित कर कृषि क्षेत्र में दर्ज की नई उपलब्धि

सरसों की औसतन 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार

कुमार मुकेश/हप्र
हिसार, 18 मार्च

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच-2101 विकसित कर कृषि क्षेत्र में नई उपलब्धि दर्ज की है। यह उन्नत किस्म विशेष रूप से सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए उपयुक्त है और देश में खाद्य तेल के आयात को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बलदेव राज कांबोज ने इस उपलब्धि पर वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए कहा कि यह किस्म हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू तथा उत्तरी राजस्थान के किसानों के लिए वरदान साबित होगी। उन्होंने बताया कि इस हाइब्रिड किस्म को हाल ही में गजट अधिसूचना के माध्यम से मंजूरी मिली है।

तीन वर्षों तक अखिल भारतीय समन्वित सरसों एवं राई अनुसंधान परियोजना के तहत गहन परीक्षण के बाद विकसित यह किस्म औसतन 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर पैदावार देती है। यह पुरानी किस्म आरएच-749 से 14.5 प्रतिशत, डीएमएच-1 से 11 प्रतिशत तथा निजी कंपनी की हाइब्रिड किस्म से 8 प्रतिशत अधिक उत्पादन देने में सक्षम है।

कुलपति ने कहा कि अधिक उपज और उच्च तेल मात्रा के कारण यह किस्म किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय होगी, जिससे तिलहन उत्पादन के साथ किसानों की आय में भी वृद्धि होगी। उन्होंने वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट कार्य की सराहना करते हुए बताया कि सरसों अनुसंधान टीम को पिछले 12 वर्षों में चार बार सर्वश्रेष्ठ केंद्र अवार्ड मिल चुका है।

इस किस्म के विकास में डॉ. राम अवतार, डॉ. नीरज कुमार, डॉ. मंजीत सिंह, डॉ. अशोक कुमार और डॉ. सुभाष चंद्र की प्रमुख भूमिका रही, जबकि अन्य वैज्ञानिकों ने भी महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

पैदावार भी ज्यादा, तेल भी भरपूर

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने बताया कि आरएचएच-2101 किस्म लगभग 142 दिन में तैयार हो जाती है। इसमें शाखाएं अधिक होती हैं और प्रत्येक फली में दानों की संख्या भी ज्यादा रहती है। इसके दानों में लगभग 40 प्रतिशत तेल पाया जाता है, जो इसे अन्य किस्मों से बेहतर बनाता है।

अनुसंधान में हकृवि का परचम

विश्वविद्यालय के तिलहन अनुभाग ने अब तक सरसों और राई की 25 उन्नत किस्में और एक हाइब्रिड किस्म विकसित की हैं। आरएच-725, आरएच-1424 और आरएच-1975 जैसी किस्में देशभर के किसानों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं और इनके बीजों की अन्य राज्यों में भी भारी मांग है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	19.3.26	12	1-7

हकृवि ने विकसित की सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच 2101

हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बढ़ाएगी पैदावार

हिसार, 18 मार्च (विरेंद्र र्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा ृषि विश्वविद्यालय ने सरसों की हली हाइब्रिड किस्म आरएचएच 101 विकसित कर एक ह्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। ह हाइब्रिड किस्म सिंचित क्षेत्रों में मय पर बुवाई के लिए उपयोगी द्ध होगी और देश में तेल के ायात को कम करने में अहम मिका निभाएगी। विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. बलदेव राज म्बोज ने विकसित की गई इस त किस्म के लिए वैज्ञानिकों को धाई दी है।

कुलपति प्रो. काम्बोज ने ाया कि हकृवि के सरसों ज्ञानिकों द्वारा विकसित इस इब्रिड किस्म को हाल ही में ट अधिसूचित किया गया है। ह हाइब्रिड किस्म हरियाणा, ाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में सरसों की पैदावार को बढ़ाने में एक वरदान सिद्ध होगी। इस किस्म को अखिल भारतीय समन्वित सरसों एवं राई अनुसंधान प्रोजेक्ट के तहत तीन साल गहन परीक्षण के बाद जारी किया गया है। यह किस्म 28 से 30 किवंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत पैदावार देती है। पुरानी किस्म आरएच 749 की तुलना में 14.5 प्रतिशत, डीएमएच-1 से 11 प्रतिशत व प्राइवेट कंपनी हाइब्रिड 45546 की तुलना में आठ प्रतिशत अधिक पैदावार देने में सक्षम है। कुलपति ने बताया कि अधिक उपज क्षमता और उच्च तेल मात्रा के कारण यह हाइब्रिड किस्म किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय होगी इससे न केवल तिलहन उत्पादन और बाजार में वृद्धि होगी बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा।

प्रेस को संबोधित करते कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज।

कुलपति ने वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट कार्य की सराहना करते हुए बताया कि इस सरसों टीम को पिछले 12 सालों में चार बार उत्कृष्ट कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ केन्द्र अवार्ड से नवाजा जा चुका है। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भविष्य में भी नई और उन्नत किस्में विकसित कर देश के तिलहन उत्पादन और कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

पैदावार के साथ तेल की मात्रा भी अधिक : अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने आरएचएच 2101 की विशेषताओं की जानकारी देते हुए बताया कि यह किस्म 142 दिन में पककर तैयार हो जाती है और 28 से 30 किवंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत उपज देती है। इस किस्म में शाखाओं की संख्या अधिक होती है तथा प्रति फलियों में दानों की संख्या भी ज्यादा होती है। जिसके कारण इसकी उपज क्षमता अन्य उन्नत किस्मों की तुलना में अधिक है। इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं। और इनमें लगभग 40 प्रतिशत तेल अंश पाया जाता है।

तिलहन अनुभाग देश के अग्रणी अनुसंधान केंद्रों में शामिल : विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिक अब तक सरसों और राई की 25 उन्नत किस्में तथा एक हाइब्रिड किस्म विकसित कर किसानों तक पहुंचा चुके हैं जिनमें से अधिकांश किस्म की खेती अन्य राज्यों के किसानों द्वारा भी की जा रही है। हाइब्रिड किस्म के प्रजनक डॉ. राम अवतार ने बताया कि इस सरसों टीम ने गत 6 सालों में इस किस्म के अलावा अलग-अलग परिस्थितियों के लिए पांच किस्में विकसित की है जिनमें से आरएच 725 आरएच 1424 व आरएच 1975 किसानों के बीच बहुत ही लोकप्रिय किस्में है तथा उनके बीज की अन्य राज्यों में बहुत ज्यादा मांग है।

हाइब्रिड किस्म को विकसित करने में इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान : इस नई किस्म को विकसित करने में सरसों वैज्ञानिक डॉ राम अवतार, डॉ नीरज कुमार, डॉ मंजीत सिंह, डॉ. अशोक कुमार और डॉ सुभाष चंद्र का अहम योगदान रहा। इस अनुसंधान कार्य में डॉ राकेश पूनिया, डॉ दिलीप कुमार, डॉ निशा कुमारी, डॉ विनोद गोयल, डॉ श्वेता, डॉ महावीर बिश्नोई और डॉ राजवीर सिंह का भी सहयोग रहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19.3.26	5	3-5

हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बढ़ाएगी पैदावार

एचएयू के वैज्ञानिकों ने विकसित की सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच 2101

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने सरसों की अपनी पहली हाइब्रिड किस्म ''आरएच 2101'' विकसित करने में सफलता हासिल की है। यह किस्म न केवल पैदावार के पिछले सभी रिकॉर्ड तोड़ेगी, बल्कि खाद्य तेल के मामले में भारत की आत्मनिर्भरता को भी नई उड़ान देगी। एचएयू के कुलपति प्रो. बलदेव राज काम्बोज ने इस उपलब्धि को देश के कृषि विकास के लिए मील का पत्थर बताया है।

वीसी प्रो. काम्बोज ने बताया कि एचएयू के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा विकसित इस हाइब्रिड किस्म को हाल ही में गजट अधिसूचित किया गया है। यह हाइब्रिड किस्म हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में सरसों की पैदावार को बढ़ाने में एक वरदान सिद्ध होगी। इस किस्म को अखिल भारतीय समन्वित सरसों एवं राई अनुसंधान प्रोजेक्ट के तहत तीन साल गहन परीक्षण के बाद जारी किया है। यह किस्म 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत पैदावार देती है। पुरानी किस्म आरएच 749 की तुलना में 14.5 प्रतिशत, डीएमएच-1 से 11 प्रतिशत व प्राइवेट कंपनी हाइब्रिड 45546 की तुलना में आठ प्रतिशत अधिक पैदावार देने में सक्षम है।

पत्रकारों से बातचीत करते वीसी प्रो. बीआर काम्बोज।

इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

इस नई किस्म को विकसित करने में सरसों वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार, डॉ. नीरज कुमार, डॉ. मंजीत सिंह, डॉ. अशोक कुमार और डॉ. सुभाष चंद्र का अहम योगदान रहा। इस अनुसंधान कार्य में डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. दिलीप कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. विनोद गोयल, डॉ. श्वेता, डॉ. महावीर बिश्नोई और डॉ. राजवीर सिंह का भी सहयोग रहा।

142 दिन में होगी तैयार, पैदावार के साथ तेल की मात्रा भी अधिक

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने आरएचएच 2101 की विशेषताओं की जानकारी देते हुए बताया कि यह किस्म 142 दिन में पककर तैयार हो जाती है और 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत उपज देती है। इस किस्म में शाखाओं की संख्या अधिक होती है तथा प्रति फलियों में दानों की संख्या भी ज्यादा होती है। जिसके कारण इसकी उपज क्षमता अन्य उन्नत किस्मों की तुलना में अधिक है। इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं। और इनमें लगभग 40 प्रतिशत तेल अंश पाया जाता है।

पिछले 6 सालों में टीम ने 5 किस्में की विकसित, अन्य राज्यों में ज्यादा मांग

विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिक अब तक सरसों और राई की 25 उन्नत किस्में तथा एक हाइब्रिड किस्म विकसित कर किसानों तक पहुंचा चुके हैं जिनमें से अधिकांश किस्म की खेती अन्य राज्यों के किसानों द्वारा भी की जा रही है। हाइब्रिड किस्म के प्रजनक डॉ. राम अवतार ने बताया कि इस सरसों टीम ने गत 6 सालों में इस किस्म के अलावा अलग-अलग परिस्थितियों के लिए पांच किस्में विकसित की है जिनमें से आरएच 725 आरएच 1424 व आरएच 1975 किसानों के बीच बहुत ही लोकप्रिय किस्में हैं तथा उनके बीज की अन्य राज्यों में बहुत ज्यादा मांग है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	19.2.26	2	1-6

कृषि

एचएयू के कुलपति प्रो. कांबोज बोले-हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में बढ़ाएगी पैदावार

सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच 2101 विकसित

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा की सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच 2101 को हाल ही में गजट अधिसूचित किया गया है। यह हाइब्रिड किस्म हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में सरसों की पैदावार को बढ़ाने में वरदान सिद्ध होगी।

यह किस्म 28 से 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत पैदावार देती है। पुरानी किस्म आरएच 749 की तुलना में 14.5 प्रतिशत, डीएमएच-1 से 11 प्रतिशत व प्राइवेट कंपनी हाइब्रिड 45546 की तुलना में आठ प्रतिशत अधिक पैदावार देने में सक्षम है।

हिसार में मीडिया से बातचीत करते कुलपति प्रो. कांबोज व अन्य। अमर उजाला

बुधवार को एचएयू के फेकल्टी क्लब में मीडिया से बातचीत करते हुए प्रो.बीआर कांबोज ने बताया कि इस किस्म को अखिल भारतीय समन्वित सरसों एवं राई अनुसंधान प्रोजेक्ट के तहत तीन साल गहन परीक्षण के बाद जारी किया है। अधिक उपज क्षमता और उच्च तेल मात्रा के कारण यह हाइब्रिड किस्म किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय होने की उम्मीद है।

अनुसंधान निदेशक डॉ राजबीर गर्ग ने आरएचएच 2101 की विशेषताओं की जानकारी देते हुए बताया कि यह किस्म 142 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं। इनमें लगभग 40 प्रतिशत तेल अंश पाया जाता है। सरसों वैज्ञानिक अब तक सरसों और राई की 25 उन्नत किस्में तथा एक हाइब्रिड किस्म विकसित कर किसानों तक पहुंचा चुके हैं।

23-24 को होने वाले कृषि मेले में मुख्य अतिथि होंगे सीएम

हाइब्रिड किस्म के प्रजनक डॉ. राम अवतार ने बताया कि इस सरसों टीम ने पिछले 6 सालों में इस किस्म के अलावा अलग-अलग परिस्थितियों के लिए पांच किस्में विकसित की है, जिनमें से आरएच 725 आरएच 1424 व आरएच 1975 की अन्य राज्यों में भी मांग है। इस नई किस्म को विकसित करने में सरसों वैज्ञानिक डॉ राम अवतार, डॉ नीरज कुमार, डॉ मंजीत सिंह, डॉ. अशोक कुमार और डॉ सुभाष चंद्र का योगदान रहा।

इस अनुसंधान कार्य में डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. दिलीप कुमार, डॉ निशा कुमारी, डॉ विनोद गोयल, डॉ श्वेता, डॉ महावीर बिश्नोई और डॉ राजवीर सिंह का भी सहयोग रहा।

कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने बताया कि 23-24 मार्च को एचएयू में दो दिवसीय कृषि मेला आयोजित किया जाएगा। मेले में सीएम नायब सिंह सैनी मुख्य अतिथि होंगे। प्रदेश के कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा कार्यक्रम में अध्यक्षता करेंगे। मेले में प्रदेशभर के चुनिंदा प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया जाएगा। मेले में आधुनिक तकनीकों से अवगत कराया जाएगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	19.3.26	9	1-6

हकृवि ने विकसित की सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म आरएचएच-2101

पंजाब, दिल्ली, जम्मू व उत्तरी राजस्थान में भी लहलाएगी म्हारी सरसों

सिंचित क्षेत्रों में पैदावार बढ़ाएगी नई किस्म

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने सरसों की पहली हाइब्रिड किस्म

आरएचएच-2101 विकसित कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। यह हाइब्रिड किस्म सिंचित क्षेत्रों में समय पर बुवाई के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और देश में तेल के आयात को कम करने में अहम भूमिका निभाएगी। हकृवि के सरसों वैज्ञानिकों द्वारा विकसित इस हाइब्रिड किस्म को हाल ही में गजट अधिसूचित किया गया है।

यह हाइब्रिड किस्म हरियाणा, पंजाब, दिल्ली, जम्मू और उत्तरी राजस्थान के सिंचित क्षेत्रों में सरसों की पैदावार को बढ़ाने में एक वरदान सिद्ध होगी। इस किस्म को अखिल भारतीय समन्वित सरसों एवं राई अनुसंधान प्रोजेक्ट के तहत तीन साल गहन परीक्षण के बाद जारी किया गया है। यह किस्म 28 से 30 किवंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत पैदावार देती है। पुरानी किस्म आरएच 749 की तुलना में 14.5 प्रतिशत, डीएमएच-1 से 11 प्रतिशत व प्राइवेट कंपनी हाइब्रिड 45546 की तुलना में आठ प्रतिशत अधिक पैदावार देने में सक्षम है। अधिक उपज क्षमता और उच्च तेल मात्रा के कारण यह हाइब्रिड किस्म किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय होगी इससे न केवल तिलहन उत्पादन और बाजार में वृद्धि होगी बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार आएगा।विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने बुधवार को पत्रकारों से बातचीत में विकसित की गई इस उन्नत किस्म के लिए वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

कुलपति ने वैज्ञानिकों के उत्कृष्ट कार्य की सराहना करते हुए बताया कि इस सरसों टीम को पिछले 12 सालों में चार बार उत्कृष्ट कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ केन्द्र अवार्ड से नवाजा जा चुका है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक भविष्य में भी नई और उन्नत किस्में विकसित कर देश के तिलहन उत्पादन और कृषि विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते रहेंगे।

पैदावार के साथ तेल की मात्रा भी अधिक

अनुसंधान निदेशक डॉ. राजबीर गर्ग ने आरएचएच-2101 की विशेषताओं की जानकारी देते हुए बताया कि यह किस्म 142 दिन में पक कर तैयार हो जाती है और 28 से 30 किवंटल प्रति हेक्टेयर तक औसत उपज देती है। इस किस्म में शाखाओं की संख्या अधिक होती है तथा प्रति फलियों में दानों की संख्या भी ज्यादा होती है। जिसके कारण इसकी उपज क्षमता अन्य उन्नत किस्मों की तुलना में अधिक है। इसके दाने मध्यम आकार के होते हैं। और इनमें लगभग 40 प्रतिशत तेल अंश पाया जाता है।

अनुभाग देश के अग्रणी अनुसंधान केंद्रों में

विश्वविद्यालय के सरसों वैज्ञानिक अब तक सरसों और राई की 25 उन्नत किस्में तथा एक हाइब्रिड किस्म विकसित कर किसानों तक पहुंचा चुके हैं जिनमें से अधिकांश किस्म की खेती अन्य राज्यों के किसानों द्वारा भी की जा रही है। हाइब्रिड किस्म के प्रजनक डॉ. राम अवतार ने बताया कि इस सरसों टीम ने गत 6 सालों में इस किस्म के अलावा अलग-अलग परिस्थितियों के लिए पांच किस्में विकसित की है जिनमें से आरएच 725 आरएच 1424 व आरएच 1975 किसानों के बीच बहुत ही लोकप्रिय किस्में है तथा उनके बीज की अन्य राज्यों में बहुत ज्यादा मांग है।

इन वैज्ञानिकों का रहा योगदान

सरसों की इस नई किस्म को विकसित करने में सरसों वैज्ञानिक डॉ. राम अवतार, डॉ. नीरज कुमार, डॉ. मंजीत सिंह, डॉ. अशोक कुमार और डॉ. सुभाष चंद्र का अहम योगदान रहा। इस अनुसंधान कार्य में डॉ. राकेश पूनिया, डॉ. दिलीप कुमार, डॉ. निशा कुमारी, डॉ. विनोद गोयल, डॉ. श्वेता, डॉ. महावीर बिश्नोई और डॉ. राजवीर सिंह का भी सहयोग रहा।